गाँव, नदी और कठपुतली का इतिहास

रुबीना ख़ान व महेश झरबड़े

इतिहास की पढ़ाई अकसर तथ्यों और अतीत के जंगल में खो जाती है। कौन-सी घटना किस तारीख़ को और किस साल में हुई, इसे रटने में ही सारा समय और मेहनत ख़र्च हो जाती है। तारीख़ें, तथ्य और साल रटने पर ज़ोर बच्चों में इतिहास की समझ विकसित नहीं होने देता है। इस लेख में इतिहास पढ़ाने की एक वैकल्पिक कार्यविधि का विस्तार से विवरण है। लेख बताता है कि स्थानीय परिवेश में उपलब्ध चीज़ों के सहारे बच्चों का इतिहास से जीवन्त रिश्ता बनाने की शुरुआत की जा सकती है और बच्चों में इतिहास के प्रति दिलचस्पी को जगाया जा सकता है। -सं.

चूँकि इतिहास जीवन जीने, जीवन के अनेक पहलुओं को समझने, और आगामी समय के निर्णय लेने में बेहद मददगार है, इसलिए हमने सोचा कि हम जिन समूहों के साथ काम कर रहे हैं, उनको भी इतिहास समझने के सफ़र में शामिल किया जाए। इतिहास तिथियाँ या साल रटने, राजाओं-महाराजाओं का नाम याद रखने से कहीं ज़्यादा होता है, यह बात हमारे मन में स्पष्ट थी। इस महत्त्वपूर्ण विषय को पढ़ने के साथ-साथ समझने की ज़रूरत भी है, अन्यथा यह रटने और प्रश्नोत्तर लिखने में ही सिमट जाता है। इसी नज़रिए को ध्यान में रखते हुए, हमने खरगोन ज़िले के नागझिरी गाँव, बैतूल ज़िले के हांडीपानी गाँव, और भोपाल शहर की कठपुतली बस्ती का चयन किया। योजना के मुताबिक़, इन जगहों के बच्चों के साथ समूहों में बातचीत हुई।

1. बालिका माध्यमिक शाला नागझिरी स्कूल में कक्षा आठवीं की बालिकाओं ने यह तय किया कि उनका गाँव नागझिरी पहले कैसा था, यहाँ कौन-कौन सी धरोहरें बहुत पुरानी हैं और उनसे जुड़ी क्या कहानी है, वे सब मिलकर ये पता लगाएँगी।
2. हांडीपानी में कक्षा 9वीं और 10वीं के कुल 7 विद्यार्थियों ने मिलकर पता लगाया कि हमारे गाँव में बहने वाली नदी कहाँ से निकलती है, और किन गाँवों से होते हुए कहाँ जाकर मिलती है?
3. भोपाल की कठपुतली बस्ती के 5 विद्यार्थियों की टीम ने ये पता किया कि उनके समुदाय में कठपुतली का काम कब से चल रहा है, और भोपाल के अलावा ये काम और कहाँ-कहाँ प्रचलित है? इस काम का सफ़र कैसा रहा और कैसे यह काम अभी तक जीवित रह पाया है?

सभी जगहों के बच्चों ने पहली बार इस तरह का अभ्यास किया और उन्होंने कई बातें सीखीं, जैसे– कई लोगों के साथ मिलते हुए उनसे विषयानुसार बात करना; सवाल से जुड़ी बात को समझने के लिए अलग-अलग जगह जाना; गाँव के पुराने लोगों से मिलकर बात करना; अनुमान व प्राप्त जानकारी के आधार पर नए प्रश्न बनाना; पिछली बात को याद रखते हुए आगे की बातों का लिंक बनाना; प्राप्त हुई जानकारी को एक जगह इकट्ठा करके क्रमवार

प्रस्तुत करना; ख़ुद के परिवेश से जुड़े इतिहास को समझना; इत्यादि। समूहों द्वारा एकत्रित की गई जानकारियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

नागझिरी की कहानी

माध्यमिक शाला नागझिरी के कक्षा आठवीं के बच्चों ने बताया कि इस गाँव का नाम पहले 'नागज़हरी' था। फिर बदलते-बदलते ये नागझिरी हो गया। ऐसा लोग कहते हैं कि तक्षक नाग के कारण इसका यह नाम पड़ा है। गाँव के लोग बताते हैं कि इस नाग का सिर हमारे गाँव में है। जिस जगह सिर है, वहाँ एक बावड़ी है। एक अन्य गाँव तक उसकी पूँछ गई है। जिस गाँव में पूँछ निकली है, उस गाँव को 'दशनावल' कहते हैं। यह जगह यहाँ से 16 किलोमीटर दूर है।

गाँव में बावड़ी, बोंदरू बाबा का समाधि स्थल (अब यहाँ एक मन्दिर है और आज पूरे क्षेत्र को बोंदरू बाबा के नाम से पहचाना जाता है। यहाँ बोंदरू बाबा सैटेलाइट स्कूल भी है)। पुराना स्कूल और शिव मन्दिर सबसे पुराने हैं। बोंदरू बाबा में सावन के एक दिन बाद एक दिन का मेला लगता है जिसमें कच्ची कैरी (आम) के प्रसाद का प्रचलन है।


चित्र : महेश झरबड़े

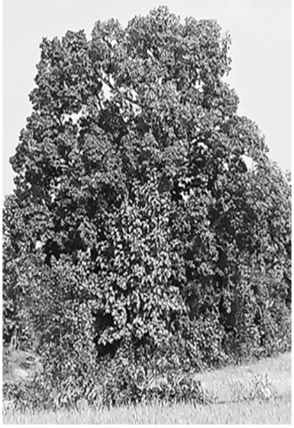
कक्षा के बच्चों ने पूछताछ करते हुए एक बुज़ुर्ग दशरथजी से भी मुलाक़ात की। वे 80 साल के हैं। उन्होंने बताया, "गाँव में जिस बिल्डिंग में आज पोस्ट ऑफ़िस है, पहले वो इस गाँव का स्कूल हुआ करता था। मैं वहाँ पहली तक ही गया, फिर आगे नहीं पढ़ा। पहले जब मैं छोटा था, तब यहाँ पूरा जंगल था। शाम 6 बजे के बाद घर से नहीं निकलते थे, क्योंकि शेर के आने का डर हमेशा रहता था। उस समय तो हिरण हमारे पास से भागते थे और लगातार सात-सात दिन तक बारिश होती थी, वैसी तो अब होती ही नहीं है। पहले सबके घर कच्चे या कवेलू वाले होते थे। यहाँ बहुत बन्दर थे तो घरों पर उछल-कूद करके कवेलू तोड़ देते थे, बड़ी मुश्किल थी उस समय में।"

जब बच्चे कक्षा में ये बातें साझा कर रहे थे तो उनके चेहरों पर अपने गाँव के प्रति अपनापन और पुराना दौर साफ़ झलक रहा था।

नदी के बारे में पता की गई जानकारी

अपने गाँव में जो नदी बहती है वो कोठा नामक गाँव से निकलती है। जहाँ से ये नदी निकलती है, वहाँ छोटी नाली जैसी लगती है। आगे बढ़ते हुए इसमें कई जल स्रोत मिलते जाते हैं और वहाँ से कुप्पा गाँव आते-आते यह नदी जैसी दिखने लगती है। इस नदी को हर गाँव में अलग-अलग कुल 23 नामों से जाना जाता है। मसलन, झिरीयागाडा, दरारी घाट, भैंसबुड़, बारहद्वारी, बटकीपाटी, गाड़ाघाट, लामाडोह, फोडेपाटी, पनघट, चीपो, ताड़ईधापड़ी, इत्यादि। यह नदी 9 गाँवों से होते हुए आगे जाकर तवा नदी में मिल जाती है। जहाँ अपनी नदी तवा से मिलती है, उस जगह को 'इंजन घाट' कहते हैं।

नदी के इन नामों में कई नाम ऐसे हैं, जिनका मतलब समझ नहीं आता। दरअसल, ये नाम कोरकू और गोंडी भाषा के शब्द हैं जिनका उस भाषा में मतलब भी है। जैसे— जब नदी में बाढ़ आती है तो नदी पार करना मुश्किल होता है। ऐसे में, एक जगह जहाँ बहाव थमा होता है और गहराई कम होती है, उस जगह से बैलगाड़ी से नदी पार की जा सकती है। उस जगह को 'गाड़ाघाट' कहा जाता है। नदी के किनारे कई सालों से एक बड़ का पेड़



चित्र : प्रेमवती

है जिसके किनारे से नदी बहती है। पास में बड़ी-बड़ी चट्टानें हैं। लोग यहाँ नहाते-धोते हैं। इस जगह को 'बड़पाटी' कहा जाता है (चित्र में वही पेड़ है)। ऐसे ही हर नाम की अपनी कहानी है। टीम ने हर नाम की कहानी इकट्ठी की, जो कई लोगों से होते हुए इन ग्रामीण इतिहासकारों तक पहुँची। नदियों के ये नाम समुदाय की सदियों पुरानी संस्कृति की तरफ़ भी इशारा करते हैं।

इस नदी पर 3 बड़े पुल और एक रेलवे पुल है। 200 से अधिक परिवारों की खेती नदी किनारे होती है। उनकी जानकारी के मुताबिक़, अभी तक 3 लोगों की नदी में डूबने से मौत हुई है। चमेली बोली, "सरजी, पोला, भुजलिया, तीरथ जैसे त्योहार तो सिर्फ़ नदी के कारण ही हम मना पाते हैं। नदी नहीं होती, तो अपना और अपने गाँव के इतने सारे जानवरों का क्या होता!"

नदी का इतिहास पता करते हुए वे सहायक नदी, नदी के किनारे पाए जाने वाले पेड़ और झाड़ियाँ, उसके किनारे की मिट्टी, पत्थरों के प्रकार आदि भी समझे। अमिता ने कहा, "भैया, हमने देखा कि नदी के किनारे ज़्यादातर पेड़ जामुन और 'कहू' (अर्जुन) के ही हैं, पर समझ नहीं आया कि ऐसा क्यों है?"

कठपुतली का इतिहास

कठपुतली बस्ती में रहने वाले कुल 5 किशोरों और सहजकर्ता रुबीना ने मिलकर कई लोगों से मुलाक़ात की। भावना कहती है, "हमने कठपुतली बस्ती में कई तरह की चीज़ें देखीं, कठपुतलियाँ देखीं और रामस्वरूप भाट (70 वर्ष), मनफूल भाट (75) और बाजू बाई (72 साल) से बात की। ये तीनों वे शख़्स हैं, जिन्होंने बचपन से कठपुतली का काम किया है। अभी भी वे यही काम करते हैं और इनके दादा-परदादा भी यही करते थे।" (इस समूह के सदस्यों में एक ऐसे व्यक्ति को भी शामिल किया गया था जो इस समुदाय का हो ताकि वो ख़ुद भी अपने समुदाय के इतिहास को समझे।)

इस समूह के सदस्यों, पूजा, अर्जुन, मुस्कान, भावना, द्वारा चर्चा कर प्राप्त की गई जानकारी के अनुसार, भोपाल में रहने वाले कठपुतली बस्ती के लोगों की कहानी राजस्थान से शुरू होती है। ये लोग राजस्थान के नागौर ज़िले में रहा करते थे। वे बताते हैं, "हम शुरू में राजे-रजवाड़ों के महलों में काम करते थे। जब उनके महल में कोई ख़ुशी का माहौल होता था, तब वे हमें बुलाते थे। जब कोई राजा युद्ध जीतकर आए, किसी अन्य राजा की ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर ले या जब महल में किसी बच्चे का जन्म हुआ हो, तब राजा के घर से हमें बुलावा आता था कि कोई कार्यक्रम कर दो। हम ये पता



चित्र : रुबीना ख़ान

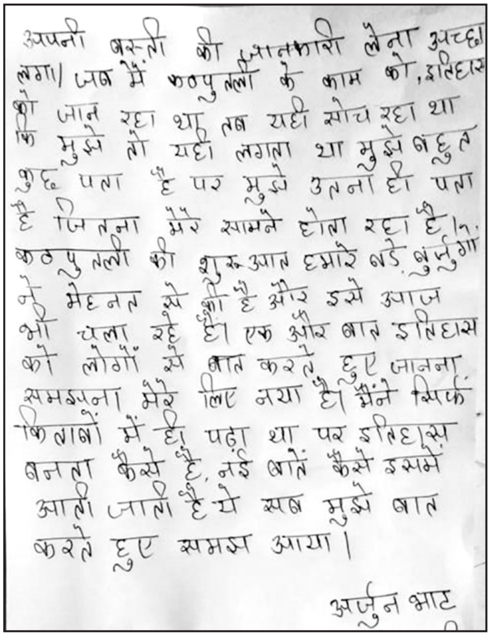
लगाते थे कि मामला क्या है, फिर कठपुतली के माध्यम से वो पात्र बनाकर शो करते थे और लोग बैठकर देखते थे।” मनफूलजी ने बताया, “मैंने अधिकतम 52 पात्रों के साथ शो किया है। ऐसे शो अकसर 3 से 4 घण्टे चला करते और चार घण्टे तक उँगलियों को रस्सी से लपेटे रहना बहुत मुश्किल भी होता था। कई बार उँगलियाँ कट जातीं और हाथ भी दर्द होने लगते। इस सफ़र में महिलाओं की अहम भूमिका रहती थी। वो अलग-अलग आवाज़ों में किरदारों के संवाद बोलतीं और ज़रूरत के अनुसार ढोल पर थाप भी देती थीं। लोग ख़ुश होकर हमें इनाम के तौर पर पैसे देते थे। हमारे दादाजी को राजा ने ख़ुश होकर ज़मीन भी दान दी थी। चूँकि हम तो एक जगह रुकने वाले नहीं हैं इसलिए वहाँ अब कोई दूसरे लोग रहते हैं।” खोजी टीम की साथी रुबीना कहती हैं कि रामस्वरूपजी द्वारा कही गई यह बात, कि राजस्थान की ज़मीन पर कई कहानियाँ रची गई हैं और अभी भी कई कहानियाँ वहाँ ज़िन्दा हैं, उन्हें बहुत अच्छी लगी।

राजस्थान के बाद वहाँ से निकलकर इस समुदाय के लोग मध्यप्रदेश के अलग-अलग ज़िलों में फैल गए। इस समुदाय को भोपाल आए हुए लगभग 50 साल हो गए हैं। भोपाल में वे सबसे पहले रोशनपुरा में तिरपाल लगाकर कुछ साल रहे, फिर उन्हें रंगमहल (एक जगह का नाम) शिफ़्ट किया गया। वहाँ से विस्थापित होकर वे राजीव नगर में रहने लगे। यहाँ रहते हुए उन्हें 35 साल हो गए हैं। बाजू बाई बताती हैं, “शुरू में किसी के घर जब कोई कार्यक्रम होता था तो लोग आकर पूछते थे कि कठपुतली वाले किधर रहते हैं। लोग ढूँढ़ते हुए हमारे घर आते थे। इस तरह धीरे-धीरे हमारी बस्ती का नाम ही कठपुतली बस्ती पड़ गया। हमें अच्छा लगता है कि बस्ती का नाम हमारी पहचान को बताता है।” आज भी यह बस्ती इसी नाम से जानी जाती है। मनफूल दादा ने कहा, “हमारा काम लगभग 1000 साल पुराना है।”

खोजी समूहों के अनुभव

मनीषा, रुकमणी और प्रेमवती कहती हैं, “हमने पहले कभी सोचा ही नहीं था कि हमारी नदी की इतनी मज़ेदार कहानी भी हो सकती है।”

अर्जुन ने बताया, “जब हम बस्ती के इन बुज़ुर्ग लोगों से बात कर रहे थे, वो लोग बहुत ख़ुश होकर हमें सबकुछ बता रहे थे। कभी वे आज की बात करते, कभी बचपन की बात


अपनी बस्ती की जानकारी लेना अच्छा लगा। जब मैं कठपुतली के काम को, इतिहास को जान रहा था तब यही सोच रहा था कि मुझे तो यही लगता था मुझे बहुत कुछ पता है पर मुझे उतना ही पता है जितना मेरे सामने होता रहा है। कठपुतली की शुरुआत हमारे बड़े बुजुर्गों ने मेहनत से की है और इसे आज भी चला रहे हैं। एक और बात इतिहास को लोगों से बात करते हुए जानना समझना मेरे लिए नया है। मैंने सिर्फ किताबों में ही पढ़ा था पर इतिहास बनता कैसे है, नई बातें कैसे इसमें आती जाती है ये सब मुझे बात करते हुए समझ आया।

अर्जुन भाट

चित्र : रुबीना ख़ान

बताते! रामस्वरूप दादा बोले, ‘ऐसा लग रहा है जैसे मैं अपने बचपन में चला गया था’, और मैं उनकी बातें सुनते-सुनते इतिहास की किताब के बारे में सोच रहा था। उनसे बात करते हुए लगा कि इतिहास में कितनी सारी बातें हैं। मुझे भी अपने आसपास का इतिहास जानना ही चाहिए।”

पूजा बोली, “मैं तो उनकी बातें सुनते हुए राजा-महाराजा की फ़िल्मों को याद करने लगी थी। उनकी बातें सुनकर यक़ीन हुआ कि कभी ऐसा भी हुआ था।”

मुस्कान बोली, “आकड़ की लकड़ियाँ, ऊपर छाई खीपड़ी, ऊँचा-ऊँचा रिबा माथे आकुड़

बाँधी झोपड़ी। ये सब कितनी कठिन लाइन हैं और उनको सब याद हैं। इसमें कितनी मेहनत लगती होगी! है न?"

प्रेमवती कहती है, "ये सब पता करते-करते मैं कई बार अचम्भित हो गई कि इतना कुछ हमारे गाँव में है। मैंने कई लोगों से बातचीत की। शुरू में मुझे चुनौतीपूर्ण लगा, पर बाद में बहुत मज़ा आया। नदी के इतने सारे नाम हैं। तब से मैं ये भी सोच रही हूँ कि हमारे आसपास कौन-कौन से पहाड़ हैं, कितनी झील होंगी, कौन-सा पक्षी अब नहीं देखने को मिलता? सब पता करने का मन है।"

मनीषा ने कहा, "मैंने नदी के बारे में पता करने के लिए अलग-अलग लोगों से बात की। मम्मी से भी बात हुई। उन्होंने बताया, 'पहले हम नदी के किनारे ही खाना / पूड़ी बनाते थे'। ये सुनकर बहुत अच्छा लगा। उनका नदी से बहुत पुराना रिश्ता है। मुझे पता नहीं था कि नदी किधर-किधर से जाती है। कभी ध्यान ही नहीं दिया कि ये भी पता करना चाहिए।"

अमिता ने कहा, "सब काफ़ी दिलचस्प था, मज़ा आया। हम सबको अपनी नदी, अपनी जगह के बारे में पता होना चाहिए।" नागझिरी में कक्षा आठवीं की बालिकाओं ने बताया, "हमने बहुत लोगों से जानकारी ली। हमारे पड़ोस की अम्मा बोलीं, 'तुम चुपचाप पढ़ाई करो नी, पता नहीं का-का पूछा करती हो?' वो शुरू में ठीक से नहीं बता रही थीं। हमने जब बताया कि हम ये क्यों कर रहे हैं, तो फिर चुप ही नहीं हो रही थीं। मेले के बारे में, गाँव के बारे में, सब बताती ही जा रही थीं। हमको बहुत मज़ा आया। हमको समझ आया कि जिसके बारे में उनको पता है, वो पूछो तो वे बिना साँस लिए बोलते जाते हैं।"

आगामी योजना

जब हम लोगों ने तय किए गए काम एक हद तक पूरे कर लिए, तो हमने पुन: सबके साथ मीटिंग करके पूछा कि हमने पूरी मेहनत से अपने तय किए काम कर लिए हैं। हमारे पास जो जानकारी प्राप्त हुई है उसका क्या किया जाए? बातचीत के बाद 'हांडीपानी' के किशोरों ने साझा किया कि हमने जो कुछ इकट्ठा किया है, उसे क्रम से लिखकर अपने पास के स्कूल में बच्चों को पढ़ने के लिए देंगे। 'कठपुतली' के बच्चों ने तय किया कि वे अपनी बस्ती में छोटी-छोटी मीटिंग करके इस समुदाय के बारे में सबको बताएँगे। ऐसे ही 'नागझिरी' की क्लास में बच्चों ने तय किया कि हम बालसभा वाले दिन सबको नागझिरी के बारे में बताएँगे। सब पुरानी जगहों की फ़ोटो खींचकर क्लास में लगाएँगे और उसकी कहानी भी लिखेंगे।

इस पूरी गतिविधि से विद्यार्थियों ने न सिर्फ़ अपने समुदाय के साथ नए तरह से सम्बन्ध बनाए, बल्कि स्थानीय इतिहास की नई चीज़ों को भी देखा। साथ ही, वे इतिहास विषय की रटने वाली छवि को भी तोड़ सके और उसे अपने जीवन व परिवेश से जोड़कर देखने की दिशा में आगे बढ़े।

रुबीना ख़ान 10 वर्षों से मुस्कान संस्था के साथ काम कर रही हैं। संस्था में शुरुआती तीन साल शहरी वंचित तबक़े के आदिवासी समुदाय ख़ासकर कामकाजी बच्चों के साथ शिक्षा पर काम किया। सात वर्षों से इन्हीं बस्तियों में यूनिसेफ़ के सहयोग से बच्चों की सुरक्षा और अधिकारों के लिए समुदाय व विभाग स्तर पर कार्य कर रही हैं। शिक्षा में दिलचस्पी होने से बच्चों के लिए पुस्तकालय व पढ़ने की गतिविधियों में भी शामिल रहती हैं।

सम्पर्क : khanrubina89@gmail.com

महेश झरबड़े पिछले 15 सालों से बच्चों व युवाओं के साथ शिक्षा सम्बन्धी कामों से जुड़े रहे हैं। एकलव्य के शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र और मुस्कान के जीवन शिक्षा पहल स्कूल में बच्चों व युवाओं के विभिन्न मुद्दों को शिक्षा के साथ जोड़कर देखने का प्रयास किया है। आदिवासी और वंचित तबक़ों के लिए किस तरह की शिक्षा हो, ये समझने का प्रयास जारी है। आपने सिनर्जी संस्थान, हरदा के साथ जुड़कर इस मुद्दे को गहराई से समझने की कोशिश भी की है। बच्चों, युवाओं व ग्रामीण विकास के मुद्दों पर पढ़ने और लिखने में रुचि है। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन मध्यप्रदेश के खरगोन ज़िले में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : mjharbade@gmail.com